Sanchi University
of Buddhist - Indic Studies

25 नवंबर, 2025

प्रेस विज्ञप्ति

आईएसबीएस सम्मेलन का समापन,

साँची विवि को अंतरराष्ट्रीय बनाने पीएम से मिलेंगे थैरो

साँची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में इंडियन सोसायटी फॉर बुद्धिस्ट स्टडीज़ का रजत जयंती समारोह सम्पन्न हो गया। सम्मेलन में 80 से ज्यादा शोध पत्र पढ़े गये और 150 बौद्ध दर्शन, संस्कृति और पालि भाषा के विद्वान शामिल हुए। सम्मेलन में वियतनाम से पूज्य भिक्षु थिक नॉट टू शामिल हुए। साँची विवि के कुलगुरु प्रो वैद्यनाथ लाभ पर एक **अभिनंदन ग्रंथ का विमोचन** भी आईएसबीएस में हुआ एवं उन्हें **लाइफटाइम अचिवमेंट अवॉर्ड** भी दिया गया। कुलगुरु ने साँची विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षांत समारोह में **वेनेगला उपतिस्स नायका थेरो को डी लिट** मानद उपाधि देने का भी फैसला किया।

मुख्य अतिथि महाबोधि सोसायटी ऑफ श्रीलंका के वेनेगला उपतिस्स नायका थेरो ने हिन्दी में साँची से अपने जुड़ाव और बौद्ध धर्म की व्याख्या की पूरे मंच और दर्शकों-श्रोताओं ने सराहना की। वो साँची के स्कूल में पढ़े, कॉलेज एस.एस जैन विदिशा से किया और भोपाल के बरकतुल्ला विश्वविद्यालय के प्रथम बैच के छात्र रहे। उन्होंने कहा कि **साँची विश्वविद्यालय को अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय बनाए जाने के लिए वो प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी** से मिलेंगे। उन्होंने इस संबंध में एक पत्र भी लिखा है। वेनेगला उपतिस्स थैरो ने कहा कि वो प्रधानमंत्री श्री मोदी से कहेंगे कि वो इसे और अधिक विस्तार दें कि ये अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय बन जाए।

साँची विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. वैद्यनाथ लाभ ने कहा कि अगर साँची विश्वविद्यालय अपने अंतरराष्ट्रीय स्वरूप में आ जाएगा तो पूरे विश्व से बौद्ध और वैदिक अध्ययन के विद्यार्थी, शोधार्थी उच्च शिक्षा के लिए यहां आ सकेंगे। कुलगुरु ने बौद्ध धर्म को सभी धर्मों का निचोड़ बताया।

वेनेगला थैरो ने कहा कि भारत में रहकर उन्होंने अनेकता में एकता को जीया है, सीखा है। थैरो ने कहा कि मैंने बुद्ध की शिक्षाओं के माध्यम से भारत में ही सीखा कि हम सब इंसान हैं। सबको देखो और मुस्कुरा दो। थोड़ा सिर झुका दो तो पूरा विश्व आपके साथ हो जाएगा। उन्होंने बताया कि महाबोधि सोसायटी में लोगों से मुस्कुरा कर मिलने से ही वो जापान में पहला थैरवाद मंदिर स्थापित कर पाए। सभी धर्मों के प्रति उनके व्यवहार से ही सऊदी अरब में जाने वाले वो पहले बौद्ध भिक्षु बने। उन्होंने कहा कि किसी भी धर्म का कोई स्कूल नहीं होना चाहिए बल्कि स्कूल ऐसे होने चाहिए जिसमें सभी धर्मों के लोग मिलकर पढ़ें ताकि अपनी संस्कृतियां साझा कर सकें। उन्होंने कहा कि वेटिकन के पोप जो अमेरिका के राष्ट्रपति से भी नहीं मिलते उनसे मिलने कोलंबो में उनके महाविहार में आए थे।

अपने उद्बोधन में आई.एस.बी.एस के अध्यक्ष प्रो. एस.पी शर्मा ने कहा कि बुद्ध की शिक्षाओं का वेनेगला उपतिस्स थैरो ने पूरा ग्रहण किया है और वो संप्रदायवाद तथा क्षेत्रवाद से ऊपर उठकर पूरे विश्व के कल्याण के लिए सोचने वाले मानवतावादी हैं। प्रो. शर्मा ने कहा कि ज्ञान गोपनीय होता तो नष्ट हो जाता। जितना हम ज्ञान का प्रचार करेंगे उतना ही इसका संवर्धन होगा। उन्होंने कहा कि बुद्ध के ज्ञान को आई.एस.बी.एस संवर्धित करने का प्रयास करता है।

शोधार्थियों और छात्रों से प्रो. शर्मा ने कहा कि अकादमिक जगत में भाषा साहित्यिक अर्थात शिष्ट भाषा होनी चाहिए। आई.एस.बी.एस की सचिव प्रो. शास्वती मुतसुद्दी ने तीन दिवसीय अकादमिक समारोह से जुड़ी कॉन्फ्रेंस रिपोर्ट पेश की। उन्होंने साँची विश्वविद्यालय में आई.एस.बी.एस के स्थानीय सचिव व सहायक प्राध्यापक डॉ. संतोष प्रियदर्शी को धन्यवाद ज्ञापित किया। धन्यवाद ज्ञापन में उपकुलसचिव श्री विवेक पाण्डेय ने सभी मंचासीन के अलावा साँची विश्वविद्यालय परिवार के प्रत्येक सदस्य को सफल आयोजन के लिए धन्यवाद दिया।

Sanchi University
of Buddhist - Indic Studies

Sanchi University
of Buddhist - Indic Studies

Sanchi University
of Buddhist - Indic Studies

दैनिक भास्कर

2025-11-26

रायसेन (3)

आयोजन • तीन दिवसीय कार्यक्रम में 80 से अधिक शोधपत्र प्रस्तुत, वैश्विक बौद्ध अध्ययन को मिलेगा नया आयाम

ऐसे स्कूल होने चाहिए जिसमें सभी धर्मों के लोग मिलकर पढ़ें और अपनी संस्कृतियों को साझा कर सकें: थेरो

सलामतपुर। सांची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में इंडियन सोसायटी फॉर बुद्धिस्ट स्टडीज (आईएसबीएस) के रजत जयंती समारोह का मंगलवार को भव्य समापन हुआ। तीन दिन चले इस आयोजन में बौद्ध धर्म और दर्शन से जुड़े 80 से अधिक शोधपत्र प्रस्तुत किए गए। समापन समारोह के मुख्य अतिथि महाबोधि सोसायटी ऑफ श्रीलंका के पूर्व अध्यक्ष वेनेगला उपतिस्स नायका थेरो रहे। उन्होंने हिंदी में कहा कि किसी भी धर्म का अलग स्कूल नहीं होना चाहिए। ऐसे स्कूल हों, जहां सभी धर्मों के लोग साथ पढ़ें और अपनी संस्कृति साझा करें। उन्होंने सांची विश्वविद्यालय की स्थापना, इसके वैश्विक स्वरूप और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से इसे अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय बनाने के प्रयास की बात कही। थेरो ने बताया कि उन्होंने अपने जीवन में अनेकता में एकता को सीखा। बौद्ध शिक्षाओं के माध्यम से मानवता का संदेश फैलाया। उन्होंने अपनी शिक्षा यात्रा और विभिन्न देशों में अनुभव साझा किए। कहा कि बौद्ध ज्ञान को सामाजिक कल्याण और मानव विकास में उपयोग करना चाहिए। आईएसबीएस अध्यक्ष प्रो. एसपी शर्मा ने कहा कि वेनेगला उपतिस्स थेरो संप्रदायवाद और क्षेत्रवाद से ऊपर उठकर वैश्विक कल्याण का संदेश देते हैं। उन्होंने शोधार्थियों और विद्यार्थियों को शिष्ट भाषा और पारिभाषिक शब्दों के महत्व को समझने की बात कही।

रजत जयंती समारोह के दौरान मंच पर मौजूद अतिथि। फोटो- अदनान खान

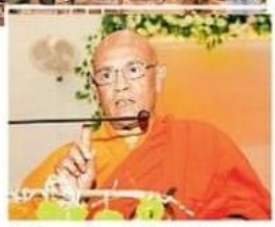
संबोधित करते हुए वेनेगला थेरो।

कार्यक्रम में रही अंतरराष्ट्रीय सहभागिता

समारोह में आईएसबीएस सचिव प्रो. शास्वती मुतसुद्दी ने तीन दिवसीय कार्यक्रम की रिपोर्ट पेश की। उपकुलसचिव विवेक पाण्डेय ने सभी मंचासीन अतिथियों और सांची विश्वविद्यालय परिवार के सदस्यों को आयोजन की सफलता के लिए धन्यवाद दिया। समारोह में विभिन्न देशों से आए शिक्षकों और शोधार्थियों की भी सराहना की गई। सांची विश्वविद्यालय ने अगले वर्ष अपने प्रथम दीक्षांत समारोह में वेनेगला उपतिस्स नायका थेरो को मानद उपाधि देने का निर्णय लिया है।

सांची विश्वविद्यालय में आइएसबीएस रजत जयंती का तीन दिवसीय समारोह का समापन

किसी भी धर्म के नहीं, बल्कि स्कूल ऐसे होने चाहिए जिसमें सभी धर्मों के लोग मिलकर पढ़ें : वेनेगल थेरो

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com
अदनान खान

सलामतपुर. सांची यूनिवर्सिटी में आयोजित इंडियन सोसायटी फॉर बुद्धिस्ट स्टडीज के रजत जयंती समारोह का मंगलवार को समापन हो गया। तीन दिन चले इस आयोजन के विभिन्न सत्रों में बौद्ध धर्म, दर्शन से संबंधित 80 से अधिक शोधपत्र पढ़े गए। समापन समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर महाबोधि सोसायटी ऑफ श्रीलंका के पूर्व अध्यक्ष वेनेगल उपतिस्स नायका थेरो रहे। वेनेगल उपतिस्स नायका थेरो के हिंदी में हृदय से व्यक्त किए गए उद्गारों की पूरे मंच और दर्शकों, श्रोताओं ने सराहना की। उन्होंने कहा कि सांची ने मुझे गर्व दिया है। वो सांची के स्कूल में पढ़े, एसएस जैन कॉलेज विदिशा में गए और भोपाल के बरकतउल्ला विश्वविद्यालय के प्रथम बैच के छात्र रहे। बाद में सारनाथ और वाराणसी में उन्होंने बौद्ध अध्ययन से संबंधित अपनी उच्च शिक्षा बीएचयू में हासिल की।

सलामतपुर. समापन सत्र में शामिल हुए अतिथि। **इनसेट:** थेरो ने किया संबोधित।

उन्होंने कहा कि किसी बौद्ध विश्वविद्यालय को सांची में स्थापित कराने की संकल्पना उनकी थी, जिसे उन्होंने तत्कालीन मध्यप्रदेश सरकार के समक्ष रखा था। सांची विश्वविद्यालय की स्थापना 2012 में श्रीलंका के राष्ट्रपति के हाथों हुई। उन्होंने कहा कि वो सांची विश्वविद्यालय को अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय बनाने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मिलेंगे और इसके लिए उन्होंने एक पत्र भी लिखा है। सांची विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. वैद्यनाथ लाभ ने कहा कि अगर सांची विश्वविद्यालय अपने अंतरराष्ट्रीय स्वरूप में आ जाएगा तो पूरे विश्व से बौद्ध और वैदिक अध्ययन के विद्यार्थी, शोधार्थी उच्च शिक्षा के लिए यहां आ सकेंगे। सांची विश्वविद्यालय ने तय किया है कि अगले वर्ष होने वाले अपने प्रथम दीक्षांत समारोह में वेनेगल उपतिस्स नायका थेरो को मानद उपाधि भी प्रदान करेगा। वेनेगल थेरो ने कहा कि भारत में रहकर उन्होंने अनेकता में एकता को जीया है, सीखा है। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में उनके दोस्त सभी धर्मों के लोग थे। थेरो ने कहा कि बुद्ध की शिक्षाओं के माध्यम से भारत में ही सीखा कि हम सब इंसान हैं। सबको देखो और मुस्कुरा दो। थोड़ा सिर झुका दो तो पूरा विश्व आपके साथ हो जाएगा। उन्होंने बताया कि जब वो महाबोधि सोसायटी में स्तूप के पास कार्य करते थे तो सबसे मुस्कुराकर मिलते थे। उन्होंने कहा कि सऊदी अरब में जब किसी अन्य धर्म के व्यक्ति को जाने नहीं दिया जाता था तब वो पहले बौद्ध व्यक्ति थे, जिन्हें उनके व्यवहार के कारण ही सऊदी अरब में जाने दिया गया था। थेरो ने कहा कि किसी भी धर्म का कोई स्कूल नहीं होना चाहिए, बल्कि स्कूल ऐसे होने चाहिए जिसमें सभी धर्मों के लोग मिलकर पढ़ें, ताकि अपनी संस्कृतियां साझा कर सकें।

आईएसबीएस के अध्यक्ष प्रो. एसपी शर्मा ने कहा कि बुद्ध की शिक्षाओं को वेनेगल उपतिस्स थेरो ने पूरा ग्रहण किया है और वो संप्रदायवाद तथा क्षेत्रवाद से ऊपर उठकर पूरे विश्व के कल्याण के लिए सोचते हैं। शर्मा ने कहा कि ज्ञान गोपनीय होता तो नष्ट हो जाता। जितना हम ज्ञान का प्रचार करेंगे उतना ही इसका संवर्धन होगा। उन्होंने कहा कि बुद्ध के ज्ञान को आइएसबीएस संवर्धित करने का प्रयास करता है।

शोधार्थियों और छात्रों से प्रो. शर्मा ने कहा कि अकादमिक जगत में भाषा साहित्यिक अर्थात शिष्ट होनी चाहिए। उसमें पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग होना चाहिए। समारोह के समापन कार्यक्रम में आइएसबीएस की सचिव प्रो. शास्वती मुतसुद्दी ने तीन दिवसीय अकादमिक समारोह से जुड़ी रिपोर्ट पेश की। साथ ही उन्होंने सांची विश्वविद्यालय में संस्था के स्थानीय सचिव व सहायक प्राध्यापक डॉ. संतोष प्रियदर्शी को धन्यवाद दिया। उपकुलसचिव विवेक पाण्डेय ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

Sanchi University
of Buddhist - Indic Studies

facebook.com/starsamachar twitter.com/starsamachar www.starsamachar.com
वर्ष 13 अंक 43 भोपाल, बुधवार, 26 नवंबर 2025 पृष्ठ-8 मूल्य 3.00
भोपाल, रतलाम व टीकमगढ़ से एक साथ प्रकाशित
सच्चाई भी, अच्छाई भी
स्टार समाचार
महानगर संस्करण

80 से ज्यादा शोध पत्र और 150 बौद्ध दर्शन संस्कृति तथा पालि भाषा के विद्वान हुए शामिल

स्टार समाचार | रायसेन

साँची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय में इंडियन सोसायटी फॉर बुद्धिस्ट स्टडीज का रजत जयंती समारोह सम्पन्न हो गया। सम्मेलन में 80 से ज्यादा शोध पत्र पढ़े गये और 150 बौद्ध दर्शन, संस्कृति और पालि भाषा के विद्वान शामिल हुए। सम्मेलन में वियतनाम से पूज्य भिक्षु थिक नॉट टू शामिल हुए। साँची विवि के कुलगुरु प्रो वैद्यनाथ लाभ पर एक अभिनंदन ग्रंथ का विमोचन भी आईएसबीएस में हुआ एवं उन्हें लाइफटाइम अचिवमेंट अवॉर्ड भी दिया गया। कुलगुरु ने साँची विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षांत समारोह में वेनेगला उपतिस्स नायका थेरो को डी लिट मानद उपाधि देने का भी फैसला किया। मुख्य अतिथि महाबोधि सोसायटी ऑफ श्रीलंका के वेनेगला उपतिस्स नायका थेरो ने हिन्दी में साँची से अपने जुड़ाव और बौद्ध धर्म की व्याख्या की पूरे मंच और दर्शकों-श्रोताओं ने सराहना की। वो साँची के स्कूल में पढ़े, कॉलेज एस.एस जैन विदिशा से किया और भोपाल के बरकतुल्ला विश्वविद्यालय के प्रथम बैच के छात्र रहे। उन्होंने कहा कि साँची विश्वविद्यालय को अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय बनाए जाने के लिए वो प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी से मिलेंगे। उन्होंने इस संबंध में एक पत्र भी लिखा है। वेनेगला उपतिस्स थैरो ने कहा कि वो प्रधानमंत्री श्री मोदी से कहेंगे कि वो इसे और अधिक विस्तार दें कि ये अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय बन जाए।

साँची विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. वैद्यनाथ लाभ ने कहा कि अगर साँची विश्वविद्यालय अपने अंतरराष्ट्रीय स्वरूप में आ जाएगा तो पूरे विश्व से बौद्ध और वैदिक अध्ययन के विद्यार्थी, शोधार्थी उच्च शिक्षा के लिए यहां आ सकेंगे।